GRT

GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

ISSN: 2231-5063
IMPACT FACTOR : 4.6052 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 8 | FEBRUARY – 2017

समकालीन हिन्दी सिनेमा में स्त्री चित्रण का बदलता स्वरूप (पार्च्ड और क्वीन फिल्म के विशेष संदर्भ में)

विजय लाल कन्नौजिया
पीएच-डी फिल्म एंड थियेटर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र.

प्रस्तावना

सिनेमा समाज के यथार्थ और समस्याओं को चित्रित करने के साथ ही बाजारवाद को भी पुष्ट करता है। सिनेमा में पूंजीवाद और पित्सत्ता का सदैव ही गठजोड़ रहा है। समाज और समय के अनुरूप जैसी स्त्री की मांग होती है सिनेमा वैसी ही स्त्री की छवि को प्रदर्शित करता है। सिनेमा का उद्देश्य सदैव समाज के यथार्थ को चित्रित करना होता है। जैसे-जैसे समाज बदलता है सिनेमा के पात्र और घटनाएँ भी बदलती जाती हैं। आज से बहुत साल पहले फ्रेंच लेखिका सिमोन द बोउआर ने कहा था 'स्त्री बनती नहीं बनाई जाती है' जिसे आज का हिंदी सिनेमा प्रतिपादित भी कर रहा है।

अब हिंदी सिनेमा ने दर्शकों की बेचैनी को समझा है उसे आवाज दी है। अनुराग कश्यप, दिवाकर बनर्जी, इम्तियाज अली जैसे युवा निर्देशकों और जोया अख्तर, रीमा कागती, किरण राव जैसी सशक्त महिला फिल्मकारों ने हिंदी सिनेमा को तीखे तेवर दिए हैं। उसके रंग-ढंग बदले हैं। इनकी स्त्रियां जीने के नए रास्ते और उड़ने को नया आसमान ढूंढ़ रही हैं। दर्शक भी रोते-बिसूरते, हर वक्त अपने दुखड़े सुनाते चरित्रों पर कुछ खास मुग्ध नहीं हो रहा। उसे भी पात्रों के सशक्त व्यक्तित्व की खोज है।

पहले हिंदी सेनेमा में आदर्श नारी के रूप में एक ऐसी स्त्री का चित्रण होता था, जो आदर्श माँ, प्रेमिका और पत्नी होती थी जो विद्रोह करे भी तो क्षण भर के लिए और अंततः भावनाओं में बह करसमर्पण कर दे। ऐसी फिल्मों में मदर इंडिया, सुजाता, बंदिनी, साहब बीबी और गुलाम, पाकीजा, परिणीता, मौसम, निकाह, अभिमान आदि कुछ महत्वपूर्ण फिल्में हैं। फिर समय बदला और समय के साथ पुरानी मान्यताएँ भी बदली। आज की फिल्मों में ऐसी स्त्री को चित्रित किया जा रहा है जिसके लिए उसके परिवार से अलग भी अपना अस्तित्व है। जो अपनी खुशियों के लिए अब किसी भी स्तर पर समझौता करने को तैयार नहीं है। समाज और सिनेमा में नायिका की छवि भी बदली है अब सभ्य, सुशील, संस्कारी स्त्री के साथ ही आधुनिक स्त्री की डिमांडभी बढ़ी है। परिणाम स्वरूप अब ऐसी फिल्मों का निर्माण हुआ जिसने स्त्री छवि का नया रूप प्रदर्शित किया। जिसमें वो अपनी स्वतंत्र पहचान, नाम और अधिकारों को लेकर थोड़ी सचेत हुई हैं। अपनी स्मिता को लेकर कोई समझौता नहीं करना चाहती। ऐसी फिल्मों में इंग्लिश-विंगलिश, क्वीन, आकाशवाणी, मरदानी, तनु विड्स मनु आदि हैं जिसमें निर्देशक स्त्री को आधुनिकता का कवच पहनाकर सामाजिक मूल्यों की स्थापना करके कहते हैं कि स्त्री की स्थिति बदली है जो एक तरह का छलावा मात्र है। एक तरफ तो लगता है कि हमारे हिंदी सिनेमा ने स्त्रियों के लिए बहुत से रास्ते खोले हैं उन्हें सशक्त किया है परंतु वहीं दूसरी तरफ वस्तु के रूप में स्त्रियों की प्रस्तुति भयावह है। आज सिनेमा में जहां मुन्नी के बदनाम कंधों पर चढ़ कर सलमान अपनी दबंगई दिखा देते हैं तो वहीं शीला की जवानी को भुनाने में निर्देशक कोई कसर नहीं छोड़ता। हिंदी सिनेमा में जहां स्त्रियों की उपस्थिती कई गुना बढ़ी है तो वहीं प्रस्तुति में बदलाव भी आया है।

कुंजी शब्द (key words) **समकालीन सिनेमा, प्रस्तुति, छवि, वस्तु, बदलाव**

समकालीन सिनेमा – समकालीन से सीधा संबंध वर्तमान में चल रहे समय से है। शोध में चुकि सम्पूर्ण समयकाल की फिल्मों को समाहित कर पाना मुमकिन नहीं था इस कारण सैंपल के रूप में सिर्फ कुछ फिल्मों को ही लिया गया है जिसका आधार समकालीन समय रहा है।

प्रस्तुति – प्रस्तुति किसी भी विषय वस्तु को आधार प्रदान करती है। सम्पूर्ण परिस्थिति की जानकारी संबन्धित प्रस्तुति के माध्यम से ही मिल पाती है अतः फिल्मों में स्त्रियों को मिलने वाले स्थान एवं मूल्यों को पहचानने के लिए उनसे संबंधित फिल्मों की प्रस्तुति को व्याख्यायित किया जाएगा।

छवि – छवि से सीधा तात्पर्य ऐसी चीजों से है जिनके माध्यम से हम किसी व्यक्ति, वस्तु या ऐसी किसी भी की पहचान करते हैं।
वस्तु – वस्तु का सीधा अर्थ इस बात से लगाया जाता है जिसे पेश किया जा सके जिसे बेचा जा सके या जिसका ब्रांडिंग निहित फायदे के लिए किया जा सके। आज के समय में स्त्रियों को किस प्रकार वस्तु के रूप में पेश किया जा रहा है इसे इस शब्द के माध्यम से शोध में समझा गया है।
बदलाव – समाज में बदलाव सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों में होते है। जेंडर को लेकर समाज में किस प्रकार का बदलाव हो रहा है। जो हो भी रहा वह सकारात्मक है या नकारात्मक यह सब जानने और समझने के लिए इस शब्द को शोध में शामिल किया गया है।

विषय का चयन एवं कारण

आज सम्पूर्ण देश या कहें कि पूरे विश्वमें समता मूलक समाज की स्थापना के लिए गंभीर विचार-विमर्श एवं प्रयास चल रहे हैं। समाज के सम्पूर्ण विकास का प्रतीक उस समाज में रह रही स्त्रियाँ होती हैं। उनकी स्थिति-परिस्थिति को देख कर पता चल जाता है कि यह समाज कितना सभ्य है। इस बात और विमर्श के उदाहरण हमें इतिहास में पूर्ण रूप से मिलते हैं। फिल्में खास-कर समाज के विकास एवं प्रतीक की वाहक होती हैं फिल्मों के माध्यम से जहां समाज की वास्तविक स्थिति का पता चलता है तो वहीं इसमें व्याप्त कुरुतियों से पर्दा भी उठताहै। स्त्री छवि को लेकर पूरे विश्व में जिस प्रकार का विमर्श चल रहा है तथा इससमस्या पर देश विदेश के तमाम शोध लेख/पत्र तथा पुस्तक में जिस प्रकार के विषय-वस्तु छप रहे हैं वो इस विषय के आधारशिला रखते हैं।

शोध विषय की सीमाएं

प्रस्तावित शोध अध्ययन को सिर्फ समकालीन हिन्दी फिल्मों तक ही केन्द्रित रखा गया है। स्त्रियों को लेकर समकालीन सिनेमा के रुख को समझने एवं व्याख्यायित करने के लिए स्त्रियों को केंद्र में रख कर शोध को अंतिम रूप दिया गया है।

शोध का उद्देश्य

- स्त्रियों के वास्तविक छवि को प्रदर्शित करने में हिंदी फिल्मों की भूमिका का अध्ययन करना।
- समकालीन हिंदी सिनेमा में स्त्रियों की छवि में किस प्रकार का बदलाव हो रहा है इसे समझना।
- क्वीन और पार्च्ड फिल्म की प्रभावशीलता एवं विषय-वस्तु पर हिन्दू एवं मुस्लिम छात्राओं के पक्ष को जानना।
- धर्म या जाती के आधार पर एक ही विषय वस्तु को देखने में आए अंतर को समझना।

शोध प्रश्न

- क्वीन और पार्च्ड फिल्म में प्रदर्शित स्त्री की बदलती छवि को दर्शक किस रूप में देखते हैं?
- क्या किसी फिल्म के विषय-वस्तु को समझने या देखने मेंदर्शक के धर्म या जाती का कोई प्रभाव पड़ता है?

शोध प्रविधि

शोध प्रविधि का सीधा संबंध शोध से संबंधित उन तमाम शोध प्रणाली और पद्धति से है जो संबंधित शोध को प्रामाणिकता के साथ पूर्ण करते हैं। शोध पूर्ण करने के लिए कई प्रकार के सामाजिक शोध प्रणाली और पद्धति का इस्तेमाल किया जाता है।

तथ्य संग्रहण एवं तथ्य विश्लेषण

प्रस्तुत शोध हेतु अनुमापन, तथ्य-विश्लेषण तथा सैंपलिंग के माध्यम से शोध का प्रारूप प्रदान करने का प्रयास किया गया। इस शोध कार्य के लिए विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया। 'क्वीन' और 'पार्च्ड' फिल्म से संबंधित सवालों और विषयवस्तु पर यह अध्ययन केंद्रित है। तथ्य संकलन के लिए प्रश्नावली का सहारा लिया गया है। सभी वर्गों को समान प्रतिनिधित्व मिले इसका पूरा खयाल रखा गया।

निदर्शन प्रविधि- इस प्रविधि का प्रयोग करते हुये शोध अध्ययन हेतु क्षेत्र का चयन किया गया।

- **अवलोकन प्रविधि-** इस प्रविधि के अंतर्गत संबंधितफिल्मों को देख कर बाह्य अवलोकन के माध्याम से फिल्मों में स्त्रियों की छवि में हो रहे बदलाव को देखा गया है। फिल्म में इस बदल को देखने के लिए संबंधित फिल्म के विषयवस्तु, संवाद तथा संगीत के आधार परआंकड़ों को संकलितकर व्याख्यायित किया गया है। इस प्रविधि के अंतर्गत दो प्रकार का अवलोकन किया गया है एक असहभागि तथा दूसरा सहभागी अवलोकन। असहभागि अवलोकनफिल्मों

को देख कर किया गया है तथा सहभागी अवलोकन उन छात्राओं पर किया गया है जिनके साथ फिल्म देखि गई है। फिल्म देखते समय छात्राओं के मानसिक स्थिति एवं पसंदना-पसंद के आधार पर सहभागी अवलोकन किया गया है।

- **व्यक्तिक अध्ययन-** इस प्रविधि के अंतर्गत चयनित क्षेत्र व समुदाय काफिल्मों में बदल रहे स्त्री छवि के मुद्दे पर विस्तृत अध्ययन किया गया।
- **प्रयोगात्मक प्रविधि-** इस प्रविधि के अंतर्गत दोनों समुदाय के छात्राओं कोशोध हेतु चयनित दोनों फिल्म को दिखा कर छात्राओं के दृष्टि का पता लगाया गया है। चयनित समुदाय के मध्य चयनित फिल्म को दिखा कर उनके जनचेतना में निहित अंतर के द्वंद को व्याख्यायित किया गया है। प्रयोगात्मक प्रविधि के अंतर्गत ही लाइब्रेरी रिसर्च का इस्तेमाल किया गया है जिसमें चयनित फिल्म को दिखा कर उससे संबंधित सवाल पूछे गएहैं।

फिल्म की पृष्ठभूमि

कला के रूप में फिल्म की रेसिपी जितना यथार्थ होती हैं उतना ही कल्पना भी और इसी के साथ यथार्थ की कुरूपता का मेकअप सुंदर कल्पना के मार्फत किया जाता है। पिंक और पार्च्ड दोनों फिल्में सुंदर कल्पना के मार्फत यथार्थ का चित्रण करती प्रतीत होती हैं। चुकी दोनों फिल्मों के अलगअलग निर्देशक, कलाकार और स्क्रिप्ट लेखक रहे हैं तो एक निश्चित अंतर का होना भी एक तरीके का यथार्थ ही है। यह यथार्थ सुंदर कल्पना के विभेद के रूप में सामने आता है।

पार्च्ड एवं पिंक फिल्म में महिलाओं को सशक्त रूप में स्थापित करने की पूरी कोशिश की गयी है। दोनों फिल्म की नायिकाएँ स्वतंत्र रहना चाहती हैं। पार्च्ड फिल्म के शुरुआती शॉट में ही सामाजिक बंधनों से जकड़ी महिलाओं के स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रदर्शित किया गया है तो वहींपिंक फिल्म का पहला दृश्य ही भारतीय सिनेमा के अब तक चले आ रहे उस परिपाटी को तोड़ता है जिसमेंकिसी पुरुष द्वारा प्रताड़ित स्त्री का चित्रण न कर निर्देशक ने एक सिर फूटे लड़के को स्टेबलिश किया है जिसके ऊपर एक स्त्री ने करारा प्रहार किया है और उसके दो दोस्त उसे हॉस्पिटल ले जा रहे होते हैं और कहते हैं कि'उन लड़कियों को देख लेंगे'... दोनों फिल्म में स्त्री संघर्ष का प्रतिनिधित्व करती तीन स्त्रियों को केंद्र में देखा जा सकता है। तीन की संख्या का वाजिब कारण तो फिल्म के निर्देशक ही बता सकते हैं। दोनों फिल्में यही दिखाने का पुरजोर कोशिश करती हैं कि आज भी हमारे पृत्सत्तात्मक समाज में स्त्रियों की हकीकत इंतजार इल्जाम, बंदिशे और गलियों तक ही सीमित हैं। फिल्में उन सारे बयानबाजी को धता साबित करती हैं जिसमें पृत्सत्तात्मक समाज द्वारा अपने सभ्य होने का प्रमाण दिया जाता रहा है। फिल्म यह दिखाने में सफल होती है कि अगर कुछ बदला है तो सिर्फ शोषण का तरीका। दोनों फिल्म घटना से ज्यादा विचार पर ज़ोर देते हैं चाहे पार्च्ड फिल्म में राधिका आप्टे द्वारा वाइब्रेट हो रहे मोबाइल फोन पर बैठ कर यौन इच्छाओं का आनंद लेते हुये दिखाया गया हो या पिंक फिल्म की नायिका द्वारा अपनी इच्छा से एक से ज्यादा पुरुषों के साथ शारीरिक संबंध वाली बात कोमुखरता के साथ स्वीकार करना दिखाया गया हो।

खि गई तो वहीं पिंक पार्च्ड फिल्म की अपेच्छा पिंक फिल्म की पठकथा थोड़ी कमजोर जरूर रही। पार्च्ड फिल्म की नायिका जहां पूरे फिल्म में सशक्त रूप में दे में डरी और सहमी हुई नजर आयी। पिंक फिल्म में लड़कों द्वारा जबरन गाड़ीमें बैठाये जाने पर नायिका उसके प्रति संघर्ष न कर माफी मांगते देखि गई। इसी संदर्भ में मैं यथार्थ के सुंदर चित्रण की बात कर रहा था जो इस फिल्म में कई जगह कमजोर नजर आया। भारतीय फिल्मों में अंत बहुत महत्वपूर्ण होता है जो सुखांत पर पूर्ण रूप से आधारित होता है फिर चाहे आप इसे दर्शक की मांग समझ ले या निर्देशक की कमजोरी। पिंक फिल्म के द इंड ने मुझे खासा निराश कियाफिल्म के अंत में न्यायधीश द्वारा सुनाये गए फैसले में तर्क से ज्यादा भावनाओं का समावेश देखा गया जो नायिकाओं के सशक्त जीत को प्रदर्शित नहींकर पाया। पिंक फिल्म के अंत ने पृत्सत्ता की उसी शक्ति संरचना को परिभाषित किया जिसमें पुरुष द्वारा स्त्री की मांग को दया रूप में मान लिया जाता है। लेकिन पार्च्डफिल्म ने फिल्म के सभी पक्ष के साथ न्याय किया एवं इस फिल्म का अंत प्रभावशाली रहा जिसमें औरतों को ही आवाज उठानेके लिए प्रेरित किया गया। इन सब के बावजूद दोनों फिल्म सामाजिक विषमताओं का सुंदर चित्रण करती हैं।

आंकड़ों का विश्लेषण और सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग

संकलित सभी महत्वपूर्ण डाटा को फिल्मों में स्त्रियों की बदलती छवि से संबंधित उद्देश्यों के अनुसार विश्लेषण किया गया है। जिसमेंफिल्मों से संबंधित संकलित सामग्री शोध के विभिन्न चरों को स्पष्ट कर उद्देश्यों की पूर्ति करता है और शोधसंबंधितप्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर निष्कर्ष तक पहुँचने में मदद करता है। आंकड़ों का विश्लेषण प्रारंभिक एवं द्वितीय प्रणाली पर निर्भर करता है इसलिए प्रारंभिक तौर पर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए व्यक्तिगत नोट्स का भी इस्तेमाल करते हुए महतवपूर्ण आंकड़ों को विश्लेषित किया गया है।

विश्लेषण

प्रश्न क्वीन और पार्च्ड फिल्म में प्रेम और विवाह का द्वंद किस तथ्य को अभिव्यक्त करता है?

Chi-Square Tests

	Value	df	Asymp. Sig. (2-sided)
Pearson Chi-Square	1.577[a]	3	.665
Likelihood Ratio	1.602	3	.659
Linear-by-Linear Association	1.366	1	.242
N of Valid Cases	30		

a. 6 cells (75.0%) have expected count less than 5. The minimum expected count is 1.50.

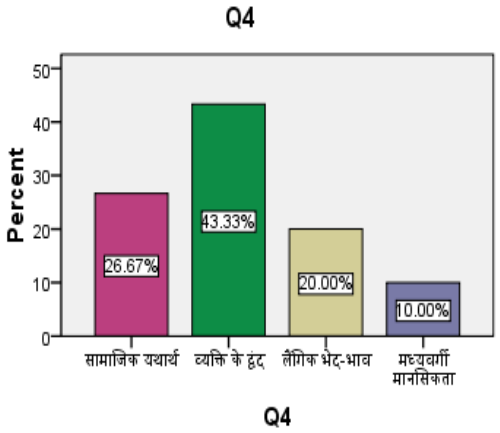

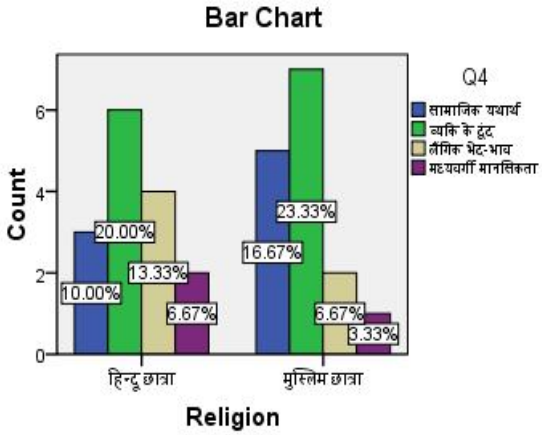

विश्लेषण –प्रश्न के जवाब के रूप में समान रूप से यह देखा गया कि ज़्यादातर छात्राओं ने प्रेम और विवाह के द्वंद को व्यक्ति के द्वंद के रूप में देखा। प्रेम और विवाह के द्वंद को सामाजिक यथार्थ और लैंगिक भेद-भाव के रूप में भी देखने वाली छात्राएँ रहीं। एक जो काफी महत्वपूर्ण बात सामने आई वह यह कि इस द्वंद को मध्यवर्गी मानसिकता की उपज को मनाने वाले छात्राओं की संख्या अन्य तीनों विकल्प की अपेक्षा बहुत कम थी। आज के समय में एक आम मानसिकता इस बात को लेकर है कि प्रेम और विवाह के द्वंद एक तरह के मध्यवर्गी मानसिकता को प्रकट करता है जबकि इसके अन्य कई कारण होते हैं जो काफी प्रबल भी होते हैं। हिन्दू और मुस्लिम छात्राओं में व्यक्ति के द्वंद को प्रेम और विवाह के द्वंद के तथ्य के रूप में सबसे ज्यादा देखा गया जबकि हिन्दू छात्राओं द्वारा लैंगिक भेद-भाव को मुस्लिम छात्राओं से अधिक तज्जबो दी गई। मध्यवर्गी मानसिकता को लेकर मुस्लिमों के दोगुना हिन्दू छात्राओं में इस मानसिकता को देखा गया।

प्रश्न - क्वीन फिल्म में रानी अपने साथी पुरुष किरदार द्वारा ठुकराई हुई होती है इसके कारण को आप किस रूप में देखती हैं?

Chi-Square Tests

	Value	df	Asymp. Sig. (2-sided)
Pearson Chi-Square	2.226[a]	2	.329
Likelihood Ratio	2.259	2	.323
Linear-by-Linear Association	1.573	1	.210
N of Valid Cases	30		

a. 2 cells (33.3%) have expected count less than 5. The minimum expected count is 2.50.

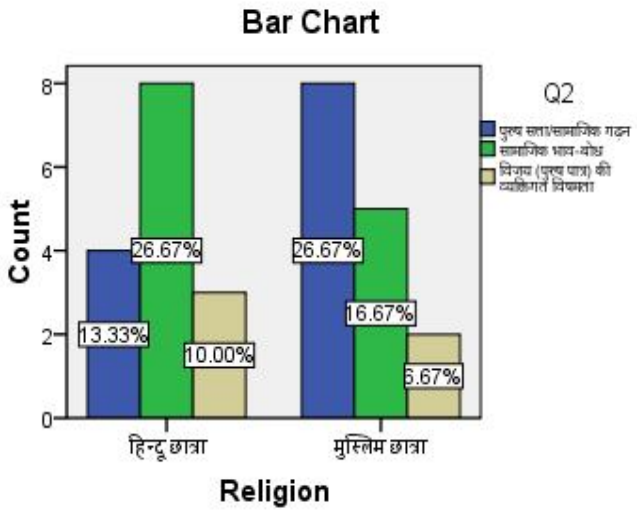

विश्लेषण – हिन्दू छात्राओं में रानी का अपने पुरुष साथी द्वारा ठुकराया जाना जहां सामाजिक भावबोध के कारण है तो वहीं मुस्लिम छात्राओं पुरुष सत्ता या सामाजिक गढ़न को ठुकराये जाने का प्रमुख कारण बताया गया। इस प्रकार एक ही दृश्य पर छात्राओं का अलगअलग मत दिखता है। आज लगभग सभी वो फिल्में जो महिला केन्द्रित बनाई जाती हैं उसमें कहीं-न-कहीं पुरुष सत्ता का समावेश होता ही है। मुस्लिम और हिन्दू छात्राओं में यह वैचारिक विभेद निश्चित रूप से उनके अपनेसामाजिक गढ़न का भी परिचय दे रहे हैं।

निष्कर्ष

- समकालीन हिंदी सिनेमा मेंस्त्रियों की छवि आंशिक रूप से ही सही लेकिन सकारात्मक और सशक्त रूप में बदल रही है।
- क्वीन फिल्म में अपेक्षाकृत पार्च्ड फिल्म के वास्तविक स्त्री के सशक्तिकरण को अधिक प्रभावशाली तरीके से दिखाया गया है।
- फिल्म का सामाजिक प्रभाव संबंधित समाज के सामाजिक गढ़न पर निर्भर करता है।
- स्त्रियों के वास्तविक सशक्तिकरण को लेकर हिन्दू और मुस्लिम समुदाय के छात्राओं की दृष्टि में बहुत ज्यादा अंतर देखने कोनहीं मिला।

संदर्भ

- मूर्ति, सी.एस.एच.एन – दास, आर. (2011). सोशल चेंज थ्रू डिफ्युजन ऑफ इनोवेशन.
- नोहाउद्विग, एस.सी. (2014). सिनेमा इज गुड फॉर यूरू द इफेक्ट ऑफ सिनेमा अटेंडेंस ओन सेल्फ रिपोर्टेड एन्क्सिटी ऑर डिप्रेसन एंड हैपीनेस.
- कैम्पबेल, जे. (1988). द पॉवर ऑफ मिथ. न्यूयॉर्क, डब्लडे.
- जेंडर रिफ्लेक्शन इन मेन स्ट्रीम हिंदी सिनेमा. ग्लोबल मीडिया जर्नल दृ इंडियन एडिशन, समर इश्यु जून, वोल्यूम. 3नम्बर. गुप्ता, एस.–गुप्ता, स. (2013).
- इमरजेन्स ऑफ सिनेमा एज स्ट्रोंग टूल ऑफ सोशल चेंज. ग्लोबल जर्नल ऑफ रिसर्च एनालिसिस–इंटरनेशनल,वोल्यूम–3 इश्यु–4 अप्रैल–आइएसएसएन नम्बर–2277–8960. तनुश्री मुखर्जी (2014).
- जैन, जे.–जैन, एस. (2011). फिल्म एंड फेमिनिज्स्म. रावत पब्लिकेशन. जयपुर.
- राड्नर, एच. (2011). नियो फेमनिस्ट सिनेमा, गर्ली फिल्म्स, चिक फ्लिक्स एंड कंज्यूमर कल्चर. रूटलेज. लन्दन.
- बीन, एम, जे.–नेगरा, डी. (2002). अ फेमनिस्ट रीडर इन अर्ली सिनेमा. ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस. लन्दन.